ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

डॉ. उषा रानी राव की कविताएँ

त्याज्या

"अलग ढूंढ़ लो अपने लिए अम्मा!
अब घर हुआ मेरा
भरें हैं गिरवी के रुपये मैंने "
चौंकी वह
बेटे की आवाज़ सुनकर
बर्फ का गोला-सा
सिर से पाँव तक गुज़र गया ..
मन के अगोचर कोने में खड़ी वह
लाज से भरी
विवस्त्र होने से भी अधिक
असहाय दशा में
ठंडी पड़ चुकी आवाज़ में
बोली -जाऊँ कहाँ मैं?
शरीर के एक हिस्से से
गूंद ,माड़ कर गढ़ा है मैंने तुमको
कब अ◌ौर क्यों तुमने
उँगली छोड़नी चाही
नही जानती ...
कितना सुखद है.
देवकी होना..
यशोदा होना ..
कितना दुस्तर है
त्याज्या माँ कहलाना !
क्या अंत नही ममत्व का ?
निर्वासन में ..
अपमान में ..
तुम्हारे अस्वीकार में !
निर्मम है सच....

उस पार

दूर..अनंत जलराशि के उस. पार ..परदेश में ..
..और ज्यादा पैसा होगा .
सुविधाओं से
संपन्न जीवन
खाने-पहनने की
कोई कमी नही..
खुशनुमा तस्वीरें ..उजागर होने लगतीं ...
गाँव की छाती पर
खड़े ...
कई नये
मकान ..
परदेस से कमाये गये पैसों से..
वह जो परदेस से
लौट रहा होता
है ..अपनों की झलक
के लिए
गाँव की जमीन पर पाँव रखते
ही ..
बाबुल के घर -सा अहसास से
भर उठता है..
यहाँ त्योहार में गाँव का गाँव

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

हुलस जाता ..

गाँव -डगर में उड़ती धूल

नाच -गाने में बजते ढोल ..

धान के खेत की महक ...

कितना ...मनभावन ?

जाने कैसे ?..सोचा होगा

परदेस में बसने का...

अभी भी गरीब की

मिट्टी सूखी है..

सपने नम हैं...यहाँ ..

बाज़ारी तिलस्म में लूटेरे

हैं ..पहरेदार !

सत्ता की ..

नीतियों का अंदाज़

है.. हमलावर ...

लौटें तो क्या होगा हासिल ?

दो दिशाओं में खुलते हैं दरवाज़े

हमेशा ...

जितना अंदर जाने के लिए ..

उतना बाहर आने के

लिए.....

बेंगलुरु, कर्नाटक

ph no. 9845532140

email ID- drusharani25@gmail.com

address: Dr. Usha Rani Rao, #94, 30th cross, Banashankari 2nd stage, Bangalore, 560070

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)